तमारा गुणनी केही कहूं वात, तमे अनेक विधे कीधी विख्यात।
पोतावट जाणी प्रमाण, इंद्रावती चरणे राखी निरवाण।। १७ ।।

आपके ऐसे गुणों की (मेहरबानियों की) मैं क्या बात कहूं? आपने अनेक तरह से भलाइयां की हैं और अपनी अंगना जानकर निश्चित रूप से इन्द्रावती को चरणों में रखा है।

चरण पसाय सुंदरबाईने करी, फल वस्त आवी रदे चढी।
चरण फल्या निध आवी एह, हवे नहीं मूकूं चित चरण सनेह।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) की कृपा से यह पूर्ण ज्ञान हृदय में आ गया। आपके चरणों की कृपा से यह न्यामत आई है, इसलिए बड़े प्यार से इन चरणों को कभी नहीं छोड़ूंगी।

चरण तले कीधुं निवास, इंद्रावती गाए प्रकास।
भाजी भरम कीधो अजवास, पामे फल कारण विस्वास।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी आपके चरणों का आसरा लेकर, वाणी का प्रकाश कर रही हैं। संशय मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया, जिस विश्वास के कारण यह फल उन्हें मिला है।

विस्वास करीने दोडे जेह, तारतमनूं फल लेसे तेह।
ते माटे कहूं प्रकास, जोपे जागी लेजो साथ।। २० ।।

जो विश्वास करके दौड़ता है, तारतम (अपने धनी की मेहर) का फल वही पाता है। इसलिए मैंने प्रकाश का वर्णन किया है। सुन्दरसाथजी इसे ग्रहण कर जाग जाना।

एटले पूरण थयो रास, इंद्रावती धणीने पास।
मूने मारे धणिए दीधी बुध, हवे प्रकास करूं तारतमनी निध।। २१ ।।

इतने में रास की लीला पूरी करके श्री इन्द्रावतीजी धनी के पास पहुंचीं और कहती हैं कि मुझे मेरे धनी ने जागृत बुद्धि दी है। अब उससे तारतम की निधि को संसार में प्रकाशित करूं?

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ४१० ।।

हवे प्रकास उपनो छे

हवे करूं ते अस्तुत आधार, वल्लभ सुणो विनती।
आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, मायानी लेहेर मूने जोर हती।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! मेरी विनती सुनो। मैं आपकी वन्दना करती हूं। मैं माया की लहर में डूबी थी और मैंने इतने दिन तक अपने प्रीतम को नहीं पहचाना।

जीव जगावी भाजी भरम, श्री वालाजीने लागूं पाए।
सोभा तमारी तीत सब्द थकी, मारी देह आ जिभ्या सब्द मांहें।। २ ।।

अपने संशय मिटाकर जीव को जगाऊं और आपके चरणों में प्रणाम करूं। हे वालाजी! आपकी शोभा शब्दातीत (पार की) है और मेरा तन और जुबान माया की है।

केणी पेरे हूं करूं अस्तुत, मारा जीवने नथी कांई बल।
मारी जोगवाई सर्वे अस्थिर वस्तनी, केम वरणवुं सोभा नेहेचल।। ३ ।।

हे धनी! मैं किस तरह से आपकी वन्दना करूं? मेरे जीव में इतना बल नहीं है। मेरा तन संसार का मिटने वाला है। आपकी शोभा अखण्ड है, उसका वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

आगल जीवे कीधी अस्तुत, भगवानजीनी भली भांत।
पंडिताई चतुराई ने प्रवीणाई, किवता मांडे छे करी खांत।।४।।

आपके आने से पहले सब जीव विष्णु भगवान (देवी-देवता) की पूजा करते थे। ज्ञान के अहंकार से पण्डिताई, चतुराई दिखाकर कविता बनाते थे।

ते प्रवाही वचन ज्यारे जोइए, तेहेमां को को छे भारे वचन।
एतां दिए अचेत थकी उपमां, पण मूने साले ते मन।।५।।

यदि इन माया के जीवों के वचनों को देखें तो इनमें भी कोई-कोई गम्भीर वचन हैं। यह लोग बेहोशी में (जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना) अपने ही देवताओं को हमारे धनी के विशेषण (उपमाएं) लगाते हैं। यह मेरे मन में खटकता है।

नोट : दुनियां के देवी-देवताओं का महाप्रलय में लय होता है, लेकिन हमारे धनी अनादि, अक्षरातीत हैं।

अजाण थके दिए एवडी उपमा, त्यारे जाण्यानो कीहो प्रमाण।
एक वचन जो पडे मुख प्रवाही, ते तां नव जाण्यूं निरवाण।।६।।

इस संसार के जीव अनजाने में यदि झूठ को इतनी उपमा देते हैं तो हम अपने को जानकर किन शब्दों से बताएं? हमारे धनी के वचन प्रवाहियों के ध्यान में आ जाएं यह तो हमने कभी सुना ही नहीं।

नव में सांभल्यूं वेद पुराण, नव सांभली किव चतुराई।
एक बे वचन मुख सांभल्या धणीना, तेणे एम जाण्यूं आ पुष्ट ओ प्रवाही।।७।।

न तो मैंने वेद-पुराणों को सुना और न ही कविता की चतुराई सुनी। धनी के मुखारबिन्द से एक दो वचन सुने, जिससे यह जानकारी स्पष्ट हो गई कि धनी की वाणी सत्य है और प्रवाहियों के ग्रन्थ झूठे हैं।

ते पण चित दई नव सांभल्या, नहीं तो पूर बढ्यो प्रघल।
आडा गुण सघला जोध जुजवा, तेणे नव लेवा दीधूं टीपूं जल।।८।।

धनी की वाणी भी मैंने चित्त देकर नहीं सुनी जो कि दरिया के बहाव के समान थी। मेरे गुण, अंग, इन्द्रिय सब विरोध में लड़ने को आ गए और उस ज्ञान के प्रवाह में से एक बूंद भी जल ग्रहण नहीं करने दिया (वाणी नहीं सुनने दी)।

हवे ते गुणने केही दीजे उपमा, फिट फिट भूंडी बुध।
प्रथम तूं मोहोवड मंडाणी, तें कां न लीधी ए निध।।९।।

अब ऐसे गुणों की क्या उपमा दूं? हे पापी बुद्धि! तुझे धिक्कार है। पहले तो तू सरदार बनकर आगे आ गई और तूने मुझे यह ज्ञान नहीं लेने दिया।

सागर पूर वह्यूं रे सनंधे, तें कां न लीधूं ए जल।
तें बुध पापनी हूं मेलूं परहरी, तें थई मोसूं निबल।।१०।।

धनी का ज्ञान सागर के बहाव की तरह बहता रहा। हे बुद्धि! तूने जरा-सा भी ज्ञान नहीं लिया। अब मैं तुझ पापी बुद्धि को छोड़ती हूं। तू मुझसे अब कमजोर हो गई (अब तेरा बल नहीं चलेगा)।

Nijanand App

हवे रे बुधडी हूं कहूं तूंने, तूं थाय बुधनो अवतार।
श्री वालाजीने वल्लभ कर रे, एक खिण म मूके लगार।। ११ ।।

हे बुद्धि! मैं तुझसे कहती हूं कि तू संभल जा और जागृत बुद्धि का अवतार बन जा। वालाजी से प्रेम कर तथा एक पल के लिए जुदा मत हो।

बीजी बुध केही आवे अम समवड, हूं बुध मांहें बुध अवतार।
बुधें करी वालाजीने वल्लभ करीस, ए बुध नहीं मूकूं लगार।। १२ ।।

बुद्धि अब जवाब देती है। दूसरी माया की बुद्धि अब मेरे समान कैसे होगी? मैं जागृत बुद्धि का ज्ञान प्राप्त कर बुद्ध अवतार बन गई हूं। अब इस बुद्धि से जागृत होकर वालाजी से प्यार करूंगी। इस जागृत बुद्धि को पल मात्र के लिए भी नहीं छोडूंगी।

बुध जी रह्या छे आसरे, जे छे बुध अवतार।
ए बुध जी विना बीजा बापडा, कोण काढे ए सार।। १३ ।।

यह जागृत बुद्धि भी हमारे सहारे थी। हमसे ही पार का ज्ञान प्राप्त करके बुध अवतार बनी (कहलाई)। इस भेद को भी जागृत बुद्धि के बिना दूसरा कौन बता सकता है?

सार काढे सुध करीने, वाणी वेहद गाए।
धन अवतार ते बुध तणो, जे रह्यो आवीने पाए।। १४ ।।

अब यह जागृत बुद्धि सब ग्रन्थों का सार निकाल कर बेहद वाणी की पहचान कराती है, इसलिए इस बुद्धि का अवतरण धन्य-धन्य है, जो हमारे चरणों में आ गई है।

ते नहीं वैकुंठ नाथने, जे रस बुध अवतार।
चरण ग्रह्या वालाजी तणां, कांई ए निध पाम्यो सार।। १५ ।।

जो रस (ज्ञान) बुध अवतार (असराफील) में है, उसकी जानकारी विष्णु भगवान को भी नहीं है। इस जागृत बुद्धि ने भी वालाजी के चरण ग्रहण किए तो यह अखण्ड ज्ञान इसको मिला।

सार पामे सुख उपनूं, धन धन ए अवतार।
आज लगे ब्रह्मांड मांहें, कोई एम न पाम्यो पार।। १६ ।।

जब उसको धनी के चरण मिल गए तो उसे अत्यन्त अखण्ड सुख मिला, इसलिए यह बुध अवतार भी धन्य है। आज तक इस ब्रह्माण्ड में कोई भी इस तरह से पार नहीं जा सका (क्योंकि किसी को भी धनी के चरण नहीं मिले थे)।

ए अवतारनी उपमा, कांई लीला अखंड थासे।
वचन एहेना विधे विधे, कांई वाणी ब्रह्मांड गासे।। १७ ।।

इस जागृत बुध अवतार की कृपा से (महिमा से) सारा ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा और इस अवतार की वाणी को सारे ब्रह्माण्ड वाले कई तरह से गाएंगे।

हवे रे श्रवणा कहूं हूं तूंने, तूंने धणिए कह्या वचन।
कां न लीधां तें वचन वचिखिण, फिट फिट भूंडा करन।। १८ ।।

हे कान! तुझे क्या कहूं? तुझे धनी ने ज्ञान सुनाया। तूने ऐसे वचिक्षण (सारगर्भित गहरे) ज्ञान को क्यों नहीं सुना? हे पापी कान! तुझे धिक्कार है।

Nijanand App

मंडाण तुझ ऊपर रे श्रवणा, लेवाए तारे बल।
धणिए धन रेढतां नव जोयूं, नेठ कां न थया निबल।। १९ ।।

हे कान! हम तो तुम्हारे ऊपर ही निर्भर थे। तुम्हारे द्वारा ज्ञान मिला था। धनीजी जब ज्ञान का धन दे रहे थे, तुम निर्बल क्यों हो गए? बलवान क्यों नहीं बने?

हवे श्रवणा तूं संभार आपोपूं, थाय वचिखिण वीर।
वाणी जे वल्लभतणी, तूं ग्रहजे द्रढ करी धीर।। २० ।।

हे कान! अब तो तू अपने आपको संभाल। अपने आपको चतुर और शक्तिशाली बना। प्रीतम की जो वाणी है, उसे धैर्य से धारण कर।

विध विधना वचन सुणयाजी, श्रवणां कहे संभारी।
जे मनोरथ हता मारा जीवने, ते पूरी वाले आस अमारी।। २१ ।।

कान कहते हैं कि हमने तरह-तरह के वचनों को सुना। हमारे जीव की जो मनोकामना थी, वह धनी ने पूरी की है।

हवे सुणीस हूं जोपे करी, नव मूकूं एक वचन।
ऐ वाणी घणू हूं वल्लभ करीस, जेम सहु को कहे धन धन।। २२ ।।

कान कहते हैं कि अब हम अच्छी तरह से सुनेंगे और एक वचन को भी नहीं छोड़ेंगे। इस वाणी को हम बड़े प्यार से ग्रहण करेंगे, जिससे सब कोई प्रशंसा करे।

हवे तूने हूं कहूं रे निद्रा, तूं नीच निबल निरधार।
गुण सघला आडी तूं फरी वली, नव लेवा दीधी निध आधार।। २३ ।।

हे नींद! अब मैं तुझे कहती हूं। तू निश्चित ही नीच और निर्बल है। सब गुणों के आगे आकर तूने अखण्ड न्यामत को नहीं लेने दिया।

तू तां केवल माया रूप पापनी, वोल्या लई तूं बाथ।
श्रवणाय तें सांभलवा न दीधी, आलस वगाई तारे साथ।। २४ ।।

हे नींद! तू तो पापी माया का ही रूप है। तूने सबको चिपट कर डुबा दिया है। तूने कानों को भी नहीं सुनने दिया, क्योंकि आलस्य और उबासी (सुस्ती) तेरे साथ हैं।

घारण घणी विध आवी जीवने, जेम मीन वीट्यो माहें जाल।
जेणे नेत्रे निध निरखूं निरमल, ते नेत्रे आडी थई पाल।। २५ ।।

तेरे कारण, जीव तुझ में ऐसे फंस गया जैसे जाल में मछली फंस जाती है। जिन आंखों से ज्ञान साफ दिखाई देता है, उन आंखों के सामने तूने परदा डाल दिया।

फिट फिट भूंडी दुष्ट पापनी, हवे तजूं तुझने निरधार।
आगे तें अवसर चूकवयो, हवे निरखूं जीवनो आधार।। २६ ।।

हे दुष्ट पापिनी नीद! तुझे धिक्कार है। अब तुझे निश्चित ही छोड़ूंगी। पहले तूने अवसर भुला दिया था। अब जीवन के आधार वालाजी को अच्छी तरह से देखूंगी और अच्छी तरह वाणी सुनूंगी।

Nijanand App

आगे निद्रा थई निबल मोसूं, धारण हुती घणी पर।
हवे तूं जीवने म आवीस ढूकडी, कर संसार मांहें घर।। २७ ।।

हे नींद! मैं पहले तेरे सामने निर्बल (मृतक समान) हो गया था क्योंकि मेरे ऊपर घोर नींद छाई थी। अब तू जीव के निकट बिल्कुल नहीं आना। तू अपना घर संसार में बना।

निद्रा कहे ज्यारे जीव जाग्यो, त्यारे में केम रेहेवाय।
चरण फल्या ज्यारे धणीतणा, त्यारे जाऊं छूं लागीने पाय।। २८ ।।

नींद जवाब देती है कि जब जीव जाग जाए तो मैं कैसे रह सकती हूं? धनी के चरणों की कृपा हुई, तो मैं उनके चरण छूकर भाग जाती हूं।

अरुचडी तूं त्यारे आवी, ज्यारे मल्या मूने श्री राज।
फिट फिट भूंडी ऊहन अकरमण, तूं सरजी स्या ने काज।। २९ ।।

जब मुझे धाम के धनी मिले, हे अरुचि! तू उस समय आई। हे पापी दुष्ट ऊंघ! धिक्कार है तुझको। तू किसलिए पैदा हुई?

फिट फिट भूंडी तें दा चूकवयो, हवे करे कांईयक बल।
जीवनजी मलया जीवने, तूं थाय संसारमां नेहेचल।। ३० ।।

हे पापी अरुचि! तुझे धिक्कार है। तेरे कारण हमारा आया दांव चूक गया। अब कुछ ताकत लगा। हमारे जीव के जीवन मिले हैं। तू संसार में जाकर अखण्ड हो जा।

अरुचडी कहे हूं बलवंती, मूने न लखे कोय।
छानी थईने आवूं जीवमां, भाजूं ते साजूं नव होय।। ३१ ।।

अब अरुचि कहती है कि मैं बड़ी बलवान हूं। मुझे कोई नहीं जानता। मैं छिपकर जीव में आती हूं और जिसको मैं मिटा देती हूं, फिर वह खड़ा नहीं हो सकता।

ज्यारे धणी पोते घर संभारे, त्यारे चोरी करे केम चोर।
हवे अवला मांहेथी सवलूं करूं, जई बेसू संसार मांहें जोर।। ३२ ।।

जब धनी अपने घर की संभाल करता है तो चोर चोरी नहीं कर सकता। अब इस उलटे को मैं सीधा कर देती हूं और संसार में जाकर बैठती हूं (संसार से अरुचि हो जाएगी)।

मूने मारो वल्लभ मल्या रे वालेस्वरी, जाणूं सेवा कीजे हरकांत।
तेणे समे आवी ऊभी तूं अकरमण, फिट फिट भूंडी स्वांत।। ३३ ।।

अरुचि कहती है कि मुझे मेरे प्यारे वल्लभ मिल गए हैं। अब मैं उनकी सेवा लगन के साथ करूंगी। अब इसके बाद पापिनी शान्ति को धिक्कारते हैं कि तू उस समय आकर खड़ी हो गई और मुझे निर्बल बना दिया।

ए निध आवे केम स्वांत कीजे, केम बेसिए करार।
दोड कीजे सघला अंगसूं, स्वांत कीजे संसार।। ३४ ।।

ऐसी अखण्ड निधि प्राप्त करके चुपचाप कैसे बैठें? अब तो सब अंगों में फुर्ती आनी चाहिए और संसार से शान्त होना चाहिए।

Nijanand App

स्वांत कहे हूं तिहां लगे हुती, जां जीवने निद्रा हती जोर।
हवे जाऊं छूं संसार मांहें, तमे करो धनीसों कलोल।। ३५ ।।

स्वांत (शान्ति) कहती है कि मैं तभी तक थी, जब तक जीव को जोर की नींद लगी थी। अब मैं संसार में जाती हूं। तुम धनी से आनन्द करो।

हवे रे तूंने कहूं लोभ लालची, फिट फिट भूंडा अजाण।
नव कीधो लोभ खरी निधनो, जेथी अरथ सरे निरवाण।। ३६ ।।

अब हे लोभ! लालच गुण! मैं तुझसे कहती हूं हे पापी मूर्ख! तुझे धिक्कार है। तूने खरी वस्तु का लोभ नहीं किया जिससे सारे कार्य सिद्ध होने थे।

हवे म थासो तमे माया ढूकडा, मारा लोभ लालच बंने जोड।
लोभ आवो मारा वालाजीमां, जेम करूं रात दिन दोड।। ३७ ।।

हे लोभ! लालच! (दोनों) अब तुम माया के निकट नहीं जाना। हे लोभ! तुम वालाजी के लिए आओ जिससे रात-दिन दौड़ती रहूं।

लोभ लालच कहे स्यो वांक अमारो, जां न वले जीवने सार।
हवे जे तमे कहूं अमने, ते जोजो केम ग्रहूं छूं आधार।। ३८ ।।

लोभ और लालच कहते हैं कि यदि जीव ही अपनी संभाल न करे तो हमारा क्या दोष है? अब हमसे तुमने कड़ा है। अब देखना कितने मजबूती के साथ प्रीतम को पकड़ते हैं।

फिट फिट भूंडी तृष्णा अभागणी, तूं निबल थई निरधार।
बीजा गुण सघला तृपत थाय, पण तूंने कोई भावठ नां भंडार।। ३९ ।।

हे अभागिनी तृष्णा! तुझे धिक्कार है। तू निश्चय ही कमजोर पड़ गई। दूसरे गुण तो तृप्त हो जाते हैं पर तू तो भूख का ही भण्डार है।

हवे तूंने केम काढुं रे तृष्णा, तोसूं मारे घणू काम।
तृष्णा आव मारा वालाजीमां, जेम वस करूं धणी श्री धाम।। ४० ।।

अब हे तृष्णा! तुझे कैसे निकालूं? तुझसे मेरा बड़ा काम है। हे तृष्णा! तू मेरे वालाजी में आजा जिससे अपने धाम धनी को मैं वश में कर सकूं।

तृष्णा कहे हूं केमे नव मूकूं, जे आत्माए देखाड्या आधार।
तमे जई बीजा गुण संभारो, ए हूं नहीं मूकूं निरधार।। ४१ ।।

तृष्णा जवाब देती है कि जब आत्मा ने अपने प्रीतम की पहचान करा दी है तो मैं किसी तरह से अब नहीं छोड़ूंगी। अब तुम जाकर के दूसरे गुणों को संभालो।

मोह कहूं सुन वातडी, मूने मल्याता मारो आधार।
फिट फिट भूंडा दुरमती, तें तोहे न छाड्यो संसार।। ४२ ।।

हे मोह! मेरी बात सुनो। मुझे मेरे प्रीतम मिले थे। हे मूर्ख पापी! तुझे धिक्कार है। तूने फिर भी संसार को नहीं छोड़ा।

Nijanand App

हवे रे आव तूं वालाजीमां, मायासूं करजे विछोह।
फरी जोगवाई आवी मारा हाथमां, हवे केवो जोध जोइए मारो मोह।। ४३ ।।

हे मोह! अब तू हमारे वालाजी में आजा। माया को छोड़ दे। अब फिर से सब साधन (जोगबाई) मेरे हाथ में आए हैं। हे मेरे मोह! अब देखें तुम्हारे में क्या ताकत है?

मोह कहे मारी वात छे मोटी, मूने जाणे सहु कोय।
जेणे ठामे हूं बेसूं, तिहांथी अलगो करी न सके कोय।। ४४ ।।

मोह कहता है कि मेरी बात बड़ी है और मुझे सब कोई जानता है। जहां मैं जाकर बैठ जाता हूं, वहां से मुझे कोई उठा नहीं सकता।

जे निध देखाडी तमे मूने, तेने जड थई वलगूं हूं अंध।
म्हारी विध तां एकज छे, बीजी न जाणू सनंध।। ४५ ।।

अब तुमने जो मुझे न्यामत दिखा दी है उसे अन्धे की तरह मजबूती के साथ पकड़ कर बैठूंगा। मेरा तो एक ही तरीका है और दूसरा मैं जानता ही नहीं।

हरख सोक तमे थयारे मायाना, फिट फिट अभागी अजाण।
धणी मले तूं हरख न आव्यो, चाले सोक न आव्यो निरवाण।। ४६ ।।

हे मूर्ख हर्ष-शोक! तुम्हें धिक्कार है। तुम माया के हो गए, धनी मिले तुम्हें खुशी नहीं हुई। जाने पर तुम्हें दुःख नहीं हुआ।

निखर तमे निवलाई घणी कीधी, एवा अंध थया अभागी।
हवे तमने हूं सूं कहूं, जे जीवे न वारया जागी।। ४७ ।।

हर्ष और शोक जीव को कहते हैं कि तुमने इतने कठोर (जड़) होकर कमजोरी दिखाई। जागृत होकर हमें रोका नहीं। ऐसे तुम अन्धे और अभागे हो गए कि अब हम तुमसे क्या कहें?

हवे रे आवो तमे खरी निधमां, आगे चूक्या अवसर।
एक लीजे लाहो श्रीवालाजीनो, बीजो हरखे जागूं म्हारे घर।। ४८ ।।

अब जीव कहता है, हे हर्ष-शोक! अब तुम सच्ची निधि (प्रीतम) में आ जाओ। पहले तुम अवसर चूक गए थे। एक वालाजी का लाभ लेकर खुशी-खुशी अपने घर जागृत हो जाऊं।

हरख कहे हूं सूं करूं, जां धणी न लिए खबर।
सोक कहे जां धणी नव कहे, तो अमे करूं केही पर।। ४९ ।।

हर्ष कहता है कि जब मालिक ही खबर न ले तो मैं क्या करूं? शोक कहता है कि मालिक ही न कहे तो मैं क्या करता?

जोध अमे बंने छऊं बलिया, हवे जोजो अमारी भांत।
धणी तमे देखाड्या अमने, अमे ते ग्रहूं छूं हरकांत।। ५० ।।

हर्ष और शोक कहते हैं कि हम दोनों ही बलवान हैं। अब हमारी चाल देखना। तुमने हमें धनी की पहचान करा दी है। इसको हमने लगन से ग्रहण कर लिया है।

Nijanand App

मद मत्सर अहंमेव अहंकार, तमे दोड कीधी संसार।
फिट फिट गुण भूंडा एवा बलिया, तमे विछोह पाड्यो मारे आधार।।५१ ।।

मद-मत्सर, अहंमेव-अहंकार (नशा-ईर्ष्या-अभिमान-अहंकार) तुम सभी माया की तरफ दौड़ गए। हे पापियो! ऐसे बलवान होकर तुमने हमारे प्रीतम से वियोग कराया।

तमे त्रणे जोधा एक सम थई, कां नव कीधी समी वात।
ज्यारे जीवनजी मल्या जीवने, त्यारे तमे कां न कीधो उलास।।५२ ।।

तुम तीनों योद्धाओं ने एक साथ होकर हमारी खबर क्यों नहीं ली? जब जीव को प्रीतम मिले थे तो तुम्हें खुशी क्यों नहीं हुई?

हवे रे तमे म्हारे पासे थाओ, मूने वली मल्या म्हारो आधार।
वले जुध करजो बुधे करी, जेम छांटो न लागे संसार।।५३ ।।

अब तुम (मद-मत्सर-अहंमेव-अहंकार) मेरे पास आओ। मुझे फिर से प्रीतम मिले हैं। अब अक्ल से ताकत लगाओ जिससे माया का असर न हो।

त्रणे जोधा अमे जोरावर, चालूं एकी वाट।
वालाजीने ग्रही करी ने, जीवने भेला करी दऊं साथ।।५४ ।।

हम तीनों योद्धा बलवान हैं और एक ही रास्ते चलते हैं। वालाजी को प्राप्त करने के लिए जीव को बलशाली बना देंगे।

हवे एवा जोध सबल तमे बलिया, मल्या मोसूं खोटे भाव।
जोगवाई गई मारे हाथ थी, पण तमे न गया सेहेज सुभाव।।५५ ।।

अब जीव सहज स्वभाव को कहता है कि तुम ताकतवर योद्धा थे, किन्तु मुझे खोटे भाव (बेईमानी) से मिले और मेरे धनी मेरे हाथ से चले गए।

मायाने मलीने रे मूरखो, मोसूं थया तमे कूडा।
फिट फिट भूंडा दुष्ट अभागी, एणी वाते न थया रूडा।।५६ ।।

हे मूर्ख! (सहज स्वभाव) तुमने माया से मिलकर मुझसे दुश्मनी की। हे अभागे! तुझे धिक्कार है। इतनी बातों पर तुम सुधरे नहीं।

सेहेज सुभाव बंने सरखी जोड, मारा जोध सबल तमे ज्वान।
जेहेनी गमां तमे थाओ, ते जीते निरवाण।।५७ ।।

हे सहज स्वभाव! तुम एक से हो। तुम मेरे जवान योद्धा हो। जिस तरफ तुम जाते हो वहां निश्चित ही जीत होती है।

हवे तमने हूं खीजी कहूं छूं, मारा सबल थाजो सुजाण।
सेहेज सुभाव करजो वालाजीसूं वालपण, मा माणजो केहेनी आण।।५८ ।।

सहज स्वभाव को जीव डांटकर कहता है कि अब तुम पहचान कर साहसी बन जाओ। वालाजी से सहज स्वभाव से प्यार करना और किसी के बहकावे में आना नहीं।

Nijanand App

सेहेज सुभाव बंने अमे बलिया, जो करे कोई कोट उपाय।
जे अमे वात ग्रहूं जोपे करी, ते केणे नव पाछी थाय।।५९ ।।

सहज स्वभाव कहते हैं कि हम दोनों ही बलवान हैं। यदि कोई करोड़ों उपाय भी करे तो हमको जीत नहीं सकता। हम जिस बात को अच्छी तरह से ग्रहण कर लेते हैं, वह किसी तरह से पीछे नहीं हटती।

हवे जोजो तमे जोर अमारो, वालोजी ग्रहूं करी खांत।
पूरो पास दई रंग चोलनो, पाडूं पटोले भांत।।६० ।।

सहज स्वभाव कहते हैं कि अब हमारी ताकत देखना। वालाजी को बड़ी चाह से ग्रहण कर लेंगे और धनी पर अपना रंग ऐसा चढ़ाएंगे जैसे नरम कपड़े पर पक्की छपाई होती है।

ममता तूं मायातणी, निबल थई निरवाण।
फिट फिट भूंडी दुष्ट पापनी, कीधी मुझने घणी हाण।।६१ ।।

अब जीव ममता से कहता है कि हे ममता! तू माया की बनकर कमजोर हो गई। हे दुष्ट पापिनी! तुझे धिक्कार है। तूने मुझे बहुत नुकसान पहुंचाया।

हवे ममता आव मारा वालाजीमां, बीजो मूक सर्व संसार।
सबल संघातण थाय मुझ पासे, मूने मल्या छे मारो आधार।।६२ ।।

हे ममता! अब तुम वालाजी में आ जाओ और सब संसार को छोड़ दो। तुम मेरी सच्ची साथी बन जाओ। मुझे मेरे प्राणाधार मिल गए हैं।

हूं संघातण छऊं जो तमारी, तमे लेओ ए निध।
ए निध अलगी थावा न दऊं, करो कारज तमे सिध।।६३ ।।

ममता कहती है कि मैं तुम्हारी साथी बन जाती हूं। तुम अपनी न्यामत संभालो। अब मैं यह न्यामत तुमसे अलग नहीं होने दूंगी। तुम अपनी सब चाहना पूरी कर लो।

हवे तूंने हूं कहूं रे कलपना, फिट फिट भूंडी अकरमण।
फोकटियाणी फजीत तें कीधां, कांई अमने अति घण।।६४ ।।

अब जीव कल्पना से कहता है कि हे कल्पना! तू कर्महीन है, पापी है, तुझे धिक्कार है। तूने बेकार में मेरी फजीहत की (मुझे अपमानित किया)।

हवे करमण था तूं आव कलपना, सेवा मांहें कर विचार।
वालैयो वालाजी मुझने मल्या, लाभ लऊं आवी मांहें संसार।।६५ ।।

हे कल्पना! अब तुम कर्मठ (न थकने वाला, कार्य करना) होकर (कार्यशील) आओ और धनी की सेवा में लगो। वालाजी मुझे माया में मिले हैं इसलिए मैं लाभ उठाऊं।

कहे कलपना ए काम म्हारो, हूं करूं विध विधना विचार।
अंग एके नव राखूं पाछो, सेवानी सेवा दाखूं सार।।६६ ।।

कल्पना कहती है कि अब यह मेरा काम है। सब प्रकार से विचार करके सब अंगों से सेवा करके दिखाऊंगी। कोई अंग पीछे नहीं रखूंगी।

Nijanand App

वेर राग बंने जोध जुजवा, साम सामा सिरदार।
वेर कीधूं तमे वल्लभजीसूं, राग कीधो संसार।। ६७ ।।

अब जीव वैर और राग से कहता है कि तुम बड़े योद्धा हो और आमने-सामने अगुए (प्रधान) हो। तुमने वालाजी से वैर किया और माया में लिप्त हो गए।

तमे मोसूं भूंडाई अति कीधी, तमने दऊं कटारी घाय।
एवो अवसर आव्यो मारा हाथमां, पण तमे भूलव्यो मूने दाय।। ६८ ।।

तुम दोनों ने (वैर और राग) मुझसे बड़ा कपट किया है, इसलिए तुम्हारे को कटारी से काट डालूं। मेरे हाथ में इतना सुन्दर अवसर आया था पर तुमने मेरा मौका गंवा दिया।

म्हारे मंडाण छे तम ऊपर, तमे कां थया मोसूं एम।
हवे हुंकारी आवो अम पासे, हूं लाभ लऊं वालाजीनो जेम।। ६९ ।।

हे वैर और राग! मुझे तुम्हारे ऊपर भरोसा था। तुम मुझसे ऐसे क्यों हो गए? अब ताल ठोंककर मेरे पास आओ जिससे मैं वालाजी का लाभ ले सकूं।

जोर करो तमे जोध जुजवा, राग आवो मांहें आधार।
वेर विधे विधे कठणाईसूं, जई बेसो मांहें संसार।। ७० ।।

हे वैर और राग! तुम अलग-अलग ताकत लगाओ। राग मेरे प्रीतम में; और वैर! तुम तरह-तरह की कठिनाइयों से संसार में चले जाओ।

वेर कहे स्यो वांक अमारो, जां धणी पोते घर नव राखे।
अमें आफरवा केम करी ग्रहूं, जां जीव चींधी नव दाखे।। ७१ ।।

वैर कहता है कि हमारा क्या कसूर है? जब घर का मालिक अपना घर नहीं देखे, जो जीव हमें इशारे से न समझावे तो हम अपने अनुमान से क्या करें?

राग कहे हूं रूडी पेरे, हलमल करूं आधार।
जीव धणी वचे अंतर टालूं, तो वखाणजो आवार।। ७२ ।।

अब राग कहता है कि मैं अच्छी तरह से प्रीतम के साथ एक रस हो जाऊंगा और जीव और धनी के बीच का अन्तर हटा दूं, तो मेरी प्रशंसा करना।

हवे वेर कहे मारी विध जोजो, केवी कठणाई करूं संसार।
कोई गुण जो जीवसूं जोर करे, तो उतरी वढूं तरवार।। ७३ ।।

वैर कहता है कि अब हमारी असलियत देखो। संसार में मैं कितनी कठोरता से व्यवहार करता हूं। दूसरा कोई भी गुण जो जीव के रास्ते में आएगा तो उसे तलवार से काट डालूंगा।

फिट फिट भूंडा स्वाद कहूं तूंने, मूने मल्याता मीठा आधार।
एह स्वाद मेलीने रे सोखिया, तूं स्वाद थयो संसार।। ७४ ।।

(अब जीव स्वाद से कहता है)—हे पापी स्वाद! तुझे धिक्कार है। मुझे मीठे प्रीतम मिले थे, जिनको तू छोड़कर संसार के निकम्मे स्वादों में लग गया।

Nijanand App

हवे रे स्वाद तूं थाय सुहागी, जोजो वल्लभनो मिठास।
ज्यारे तूं आव्यो ए मांहें, त्यारे केहिए न कर बीजी आस।।७५ ।।

हे स्वाद! तू वालाजी के मीठे रस को देखकर सौभाग्यवान बन। जब तू वालाजी के मीठे रस में आ जाएगा तो दूसरे स्वाद तुझे अच्छे नहीं लगेंगे।

स्वाद कहे ज्यारे ए सुख लाध्यो, त्यारे अभख थयो मोहजल।
उवल हतो ते टली गयो, हवे सवलो आव्यो बल।।७६ ।।

अब स्वाद कहता है कि जब यह सुख मिल गया तो संसार में खाने योग्य कुछ नहीं रहा। उलटे रास्ते हट गये और अब सीधा रास्ता मिल गया।

हवे रे कहूं तूंने गुणना उतार, तें वल्लभसूं कीधो ब्रोध।
में तूंने जाण्यो हतो सुहागी, फिट फिट कमल फेरण क्रोध।।७७ ।।

(अब जीव क्रोध से कहता है)—हे क्रोध! तुम सब गुणों में नीच हो, तुमने प्रीतम से विरोध किया। मैंने तुम्हें हितकारी समझा था, परन्तु तुमने मेरे मन को ही उलटा दिया।

क्रोध में तूंने जाण्यो पोतानो, पण नव सिध्यूं तूं मांहेंथी काम।
फिट फिट भूंडा दुष्ट अभागी, रही मारा हैडा मांहें हांम।।७८ ।।

हे क्रोध! तुमको मैंने अपना समझा था, पर तुमसे कोई काम सिद्ध नहीं हुआ। हे पापी! दुष्ट अभागे! तुझे धिक्कार है। मेरी चाहना मन की मन में ही रह गई।

हवे क्रोध कमल फेरी नाख तूं ऊंधो, ऊंधो फेरजे कमल संसारे।
एहवो अकरमी कां थई बेठो, तेम कर जेम सहु को संभारे।।७९ ।।

अब हे क्रोध! तू मेरे मन को उलटा फिरा दे, जैसे तूने पहले मेरे मन को उलटा संसार की तरफ घुमा दिया था। तू ऐसा निकम्मा होकर क्यों बैठ गया? तू कुछ ऐसा कर जिससे सब तुझे याद करें।

क्रोध कहे हूं घणुवे जोरावर, पण धणी विना करूं हूं केम।
हवे जो कोई गुण जीवने चंपावे, तो त्यारे तमे कहेजो मूने एम।।८० ।।

अब क्रोध कहता है कि मैं तो बहुत ही बलवान हूं, किन्तु मालिक के बगैर क्या करूं? यदि कोई गुण जीव को दबाता है तब तुम मुझसे कहना।

हवेने कहूं तूने चाक चकरडा, तूं चढी बेठो जीवने माथे।
आपोपूं नव ओलखया अभागी, फोकट फेरव्यो जीव निघाते।।८१ ।।

अब जीव मन से कहता है कि हे मन! तू जीव के सिर पर चढ़ के बैठ गया। हे अभागे! तूने अपने आपको नहीं पहचाना और व्यर्थ में जीव को भटका दिया।

अंध एवो कां थयो रे अभागी, तें नव सुण्यो आटलो पुकार।
फिट फिट भूंडा फेर न राख्यो. ज्यारे मलिया मूने आधार।।८२ ।।

हे अभागे मन! तू ऐसा अन्धा क्यों हो गया? क्या तूने प्रीतम की इतनी आवाज नहीं सुनी? जब मुझे धनी मिले थे उस समय तूने अपना घूमना बन्द क्यों नहीं किया? (स्थिर क्यों नहीं हुआ)।

Nijanand App

मन समरथ सबल तूं बलियो, तारा वेगनो कीहो कहूं विस्तार।
सूझ सबल मांहे तूं फरतो, आडो ऊभो द्रोड अपार।। ८३ ।।

हे मन! तू समर्थ है और बलवान है। तेरी चलने की गति का कहां तक बखान करूं? तू सब जगह घूमता है। जैसी भी स्थिति हो सब में अपार दौड़ता है (सुख में, दुःख में तथा दुनियां के हर रंग में, हर हालत में दौड़ता ही रहता है)।

हवे तूं मांहें काम म्हारे छे अति घणो, जोसूं तारो जोर मेवार।
पचवीस पख मांहें तूं फरजे, रखे अधखिण रहे लगार।। ८४ ।।

हे मन! अब तुझसे मेरा बड़ा काम है। देखता हूं कि तू मेरा कैसा साथ निभाता है? पच्चीस पक्ष जो अपने घर के हैं, तू उनमें घूम और एक पल के लिए भी रुकना नहीं।

संकल्प विकल्प छे तूं माहीं, ते तूं कर सेवा नी।
मन उमंग आणे तूं अति घणो, श्री धाम धणी मलवा नी।। ८५ ।।

हे मन! तेरे अन्दर संकल्प-विकल्प हैं (संशय ही संशय से भरा है)। अब यह सब तू सेवा में बदल दे और धाम धनी के मिलने की लबालब उमंग भर ले।

मन कहे म्हारी वात छे मोटी, अने सकल विध हूं जाणू।
गजा पखे चढी बेसूं माथें, जीवने जोपे वस आणू।। ८६ ।।

अब मन कहता है कि मेरी बात बड़ी है। मैं सब तरह जानता हूं और बुद्धि के सिर पर चढ़ बैठता हूं। जीव को अच्छी तरह से अपने वश में कर लेता हूं।

ज्यारे जीव पोते जाग्रत न थाय, त्यारे करूं केम अमे।
जोर अमारूं त्यारे चाले, ज्यारे सामा जागी बेसो तमे।। ८७ ।।

मन कहता है कि जब जीव स्वयं जागृत न हो तो मैं क्या करूं? मेरी ताकत (बस) तभी चलती है जब तुम सामने जागृत होकर बैठो।

हवे पेर जोजो तमे म्हारी, करूं म्हारा बलनो विस्तार।
निध लईने दऊं ततखिण, तो केहेजो गुण सिरदार।। ८८ ।।

मन कहता है कि अब मेरी असलियत देखना। मैं अपने बल को रोशन (जाहिर) करता हूं। जो तुम्हारी न्यामत है तुरन्त तुम्हें लाकर दूंगा, तब मुझे गुणों में प्रधान कहना।

कोई जो केलवी जाणे अमने, तो फल लई दऊं तत्काल।
सेवानी सनंधो ते देखाडूं, जेणे धणी न थाय अलगा कोई काल।। ८९ ।।

मन कहता है कि कोई मेरी कदर करे तो जाने, उसे तुरन्त मन चाही वस्तु ला देता हूं। जो धनी किसी भी समय अलग नहीं होते हैं, उन धनी की सेवा कैसे करनी चाहिए, यह मैं बताता हूं।

भरम भ्रांत कीधी तमे भूंडी, एम न करे बीजो कोए।
तारतम अजवाले वालोजी ओलख्या, तमे आडा फरी वल्या तोहे।। ९० ।।

अब जीव भ्रम-भ्रान्ति (धोखा और सन्देह) से कहता है, हे धोखा और सन्देह! तुमने पाप का काम किया है। ऐसा दूसरा कोई नहीं करता। तारतम ज्ञान के उजाले में भी वालाजी को नहीं पहचाना और उलटे बीच में आड़े आ गए।

Nijanand App

जो आकार तमारे होत रे अभागी, तो कटका करूं तरवारे।
पींजी पींजी पुरजा करी, वली वली काढूं हेठल धारे।। ९१ ।।

हे भ्रम-भ्रान्ति, हे अभागो! यदि तुम्हारा आकार होता तो तलवार से काट डालता और तुम्हारे जोड़-जोड़ के टुकड़े करके नीचे धरती पर फेंक देता।

हवे जोपे थईने जाओ संसार मांहें, ए छे तेवा थाओ तमे।
जेम अजवाले श्री वालोजीने ओलखी, एमांमूल जोत देखूं जेम अमे।। ९२ ।।

हे भ्रम-भ्रान्ति! अब सावधान होकर संसार में चले जाओ। जैसा यह संसार है वैसे ही तुम हो जाओ, ताकि हम तारतम के उजाले में अपने धाम धनी को पहचान सकें।

भरम भ्रांत कहे सांभलो जीवजी, अमने मारो तरवारो।
कीहे ठिकाणे निद्रा करो, ते आपोपूं कां न संभारो।। ९३ ।।

अब भ्रम और भ्रान्ति कहते हैं, हे जीव! सुनो, तुम हमको आज तलवार से मारते हो। आज दिन तक तुम कहां सो रहे थे? अपने आप क्यों नहीं संभले?

जेहेनो धणी पोते निध पामे, ते केम सुए करारे।
आप पोते खबर नव राखे, अने फोकट अमने मारे।। ९४ ।।

हे जीव! जिस मालिक को अपना अखण्ड फल (धाम धनी) मिले तो वह कहीं चैन से नहीं सो सकता। आप अपनी गफलत छोड़ते नहीं हो और व्यर्थ में हमें मार रहे हो?

ज्यारे तमे जाग्या जोरावर, त्यारे अमे जाऊं छूं संसार।
भले मल्या धणीजी तमने, हवे करो अजवालूं अपार।। ९५ ।।

हे जीव! जब तुम अपनी ताकत से जाग गए तो हम संसार में चले जाते हैं। तुमको तुम्हारे अच्छे धनी मिल गए। अब इस तारतम की रोशनी से वाणी का प्रकाश करो।

फिट फिट लज्या तूं थई लोकिक नी, बीजा बांध्या कुटमसों करम।
धाम धणी मूने तेडवा आव्या, तिहां तूने न आवी सरम।। ९६ ।।

अब जीव शर्म को कहता है, हे लज्जा! तू सांसारिक बनकर संसार की हो गई और झूठे कुटुम्ब कबीले से सम्बन्ध जोड़ लिया। तुझे धिक्कार है। मुझे धाम के धनी बुलाने आए हैं। वहां तुझे शर्म नहीं आई।

दुष्ट पापनी तें सूं कीधूं, आगल करीस हूं केम।
केही पेरे हूं मोंहों उपाडीस, मारा धणी आगल न आवी सरम।। ९७ ।।

जीव कहता है, हे दुष्ट, पापिनी लज्जा! यह तूने क्या किया? अब आगे मैं क्या करूंगा? परमधाम में धनी के आगे मुंह उठाकर कैसे देखूंगा? तूने मुझे शर्मिन्दा कर दिया है।

हवे रे सरमडी कहूं हूं तूने, तूं जोजे मूल सगाई।
आगे अवसर मोटो चूकी, हवे फरी आवी जोगवाई।। ९८ ।।

जीव शर्म को कहता है, हे शर्मिन्दगी! तुम मूल के सम्बन्ध को देखो। तुम पहले अच्छा मौका चूक गईं। अब फिर तन (सुअवसर) मिला है।

Nijanand App

लज्या कहे हूं घणुए भूली, हवे वालाजीसूं मुख केम मेलूं।
दुस्तर ऊपर आगज उठो, जेणे भूलवी मूने पेहेलूं।। ९९ ।।

अब शर्म कहती है कि मुझसे बड़ी भारी भूल हुई है। अब वालाजी से मुख कैसे मोड़ूं? कठिन दुनियां की शर्म पर आग लग जाए जिसने मुझे पहले भुला दिया था।

फिट फिट भूंडी आसा तूं थई सागरनी, धणी मेल्या विसारी।
जीवने सुफल जे हाथ लागूं, भूंडी ते तूं बेठी हारी।। १०० ।।

अब जीव आशा को कहता है, हे पापिनी! तू भवसागर की (माया की) हो गई और धनी को छोड़ कर माया में जाकर बैठ गई। जीव को सफल करने के लिए अखण्ड फल मिला था। हे पापिनी! उसे तू हार बैठी है (गंवा दिया है)।

एह फल तें मूकी करीने, नीच वस्त कां लीधी।
ए दोष सर्वे जीवने बेठो, तूंने सिखामण नव दीधी।। १०१ ।।

हे पापिनी आशा! तूने ऐसे अखण्ड फल को छोड़कर नीच माया को क्यों ग्रहण किया? यह सारा दोष (गुनाह) जीव पर लगा, तूने उसे समझाया क्यों नहीं?

हवे आस धणीनी घणूं मोटी, थाईस हूं विचारी।
मणा नहीं राखुं कोई आसडी, हवे लेजो सुफल संभारी।। १०२ ।।

अब आशा कहती है, मैं अच्छी तरह विचार कर कहती हूं कि धनी की आशा ही बड़ी है, इनसे छोटी वस्तु (माया की चाहना) नहीं रखूंगी और अब इससे तुम अखण्ड फल लेकर फेरा सफल करो।

अचेत गुण तूं आव्यो अकरमी, धाख थावा नव दीधी।
जीवने जे निध हाथ लागी, भूंडा तें ते जुई कीधी।। १०३ ।।

अब जीव कहता है, हे अकरमी अचेत! तू अब आया है तूने धनी की पहचान नहीं करने दी। जीव को जो न्यामत (प्रीतम) हाथ आई थी, हे पापी! तूने मुझे उससे जुदा कर दिया।

ए निधनी केही वात करूं, भूंडा फिट फिट गुण अचेत।
तुझ बेठा तिवरता न आवी, नहीं तो ए निध हूं लेत।। १०४ ।।

अब इस न्यामत (प्रीतम) की मैं बात क्या कहूं? हे पापी अचेत गुण! तुझे धिक्कार है, तेरे होते हुए मुझे तीव्रता नहीं आई नहीं तो मैं प्रीतम को ग्रहण कर लेती।

अचेत कहे हूं सागरनो, ते जाऊं छूं सागर मांहें।
निध तमारी तमे पामो, ग्रहूं तिवरता बांहें।। १०५ ।।

अब अचेत गुण कहता है कि मैं माया का हो गया था और माया में ही जा रहा हूं। तुम अब अपनी न्यामत (प्रीतम) को प्राप्त करो और बाजू पकड़ कर रखो।

फिट फिट भूंडा गुण कहूं तिवरता, मूने मल्या ता धाम धणी।
एवो अवसर कोई निगमे, तें कीधी मोसूं भूंडी घणी।। १०६ ।।

अब जीव तीव्रता को कहता है, हे पापी तीव्रता गुण! तेरे को धिक्कार है। मुझे धाम धनी मिले थे। ऐसा अवसर कोई गंवाता है? तूने मुझे धोखा दिया।

Nijanand App

वली अवसर आव्यो छे हाथमां, हवे तिवरता तू संभारे।
रात दिवस तूं जीवने दोडावे, एक पाव पल मा विसारे।। १०७ ।।

(जीव तीव्रता को कहता है) हे तीव्रता! फिर से अवसर हाथ में आया है। अब तू याद रखना। रात दिन जीव को दौड़ाते रहना। एक-चौथाई पल के लिए भी प्रीतम को नहीं छोड़ना।

तिवरता कहे हूं बलवंती, जीवने दऊं हूं जोर।
वस करी आपूं धणी तमारो, करूं पाधरा दोर।। १०८ ।।

अब तीव्रता कहती है कि मैं बलवान हूं और जीव को ताकत देती हूं। मैं धनी को वश में करके आपको दे रही हूं। अब सीधा रास्ता खोल दिया है, सीधे दौड़ो।

सील संतोख हवे आवजो ढूकडा, बांधो सागर आडी पाल।
गुण सघला केहेसो तेम करसे, नथी कांई बीजो जंजाल।। १०९ ।।

अब जीव शील और सन्तोष को कहता है, हे शील और सन्तोष! मेरे पास आओ और माया के सागर (भवसागर) के सामने परदा लगा दो (माया की चाहना खत्म कर दो)। अब सब गुणों को जो तुम कहोगे वह सब वैसा ही करेंगे। अब इन गुणों के सामने कोई झंझट नहीं है।

सील कहे संतोख सुनो, आपणने कीधां छे पाल।
परवत तांणें पूर सागरना, मांहें वेहेवट छे निताल।। ११० ।।

अब शील सन्तोष को कहता है कि आपने पाल तो बांध दी, किन्तु पहाड़ के समान सागर में प्रवाह (लहरें) आ रहा है और बहाव भी बड़ा तेज है।

आमलिया अलेखे दीसे, लेहेरों मेर समान।
मछ जोरावर मांहें छे मोटा, पाल करवी एणे ठाम।। १११ ।।

इस सागर में अनेक भंवर दिखाई देते हैं। लहरें पहाड़ के समान हैं और बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं। तुम कहते हो कि इनके सामने परदा बांध दो।

हवे बांधिए पाल खरो करी पाइयो, जेम खसे नहीं लगार।
पछे जल पोते ज्यारे ठाम ग्रहसे, त्यारे सामूं सोभा थाय अपार।। ११२ ।।

सन्तोष शील को कहता है कि अब वह अपने परदे को मजबूत खूंटे (पाए) से बांधे, जिससे परदा जरा भी खिसके नहीं। बाद में जब जल (माया की लहरें) अपने ठिकाने वापस चला जाएगा, तब हमारी शोभा बढ़ जाएगी।

हवे ए पाल अमे बांधसूं जीवजी, पण तमे थाओ तत्पर।
आ अवसर बीजी वार नहीं आवे, सोभा साथ मांहें ल्यो घर।। ११३ ।।

अब शील और सन्तोष दोनों मिलकर जीव से कहते हैं, हे जीव! तुम होशियार हो जाओ। अब हम दोनों मिलकर पाल बांध रहे हैं (परदा लगा रहे हैं)। यह अवसर तुम्हें बार-बार नहीं मिलेगा, इसलिए साथ के बीच यह शोभा अपने घर में लो।

हवे जाग जीव तूं जोपे बलिया, तूने केही दऊं गाल।
में तूने घणुए फिटकार्‌यो, पण चूक्यो अवसर निनाल।। ११४ ।।

हे बलवान जीव! तू अब जाग जा, तुझे कौन-सी गाली दूं? मैंने तुझे बहुत फटकारा, फिर भी तूने अवसर (धनी का साथ) छोड़ दिया।

Nijanand App

कठणाई में जोई जीव तारी, अति घणो निखर अपार।
धणी धमी धमीने थाक्या, पण नेठ नव गलियो निरधार।। ११५ ।।

हे जीव! मैंने तेरी कठोरता देखी, तू बेहद कठोर (निखर) है। धनी कह-कहकर थक गए पर तू निश्चित ही नहीं गला।

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

जीवनो प्रबोध

सांभल जीव कहुं वृतांत, तूने एक दऊं द्रष्टांत।
ते तुं सांभल एके चित, तूंने कहूं छूं करीने हित।। १ ।।

हे जीव! एक कथा सुनो, मैं एक दृष्टान्त तुझे देती हूं। इसको ध्यान से सुनना, मैं तेरी भलाई के वास्ते कहती हूं।

परीछिते एम पूछ्यो प्रश्न, सुकजी मूने कहो वचन।
वौद भवन मांहें मोटो जेह, मुझने उतर आपो तेह।। २ ।।

राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से एक प्रश्न पूछा कि चौदह लोकों में सबसे बड़ा कौन है? इसका मुझे उत्तर दो।

त्यारे सुकजी एम बोल्या प्रमाण, ग्रहजो वचन उत्तम करी जांण।
चौद भवनमां मोटो तेह, मोटी मतनो धणी छे जेह।। ३ ।।

तब शुकदेवजी ने इस प्रकार कहा कि इन वचनों को अच्छी तरह ग्रहण करना—चौदह लोकों में वही बड़ा है, जो बड़ी बुद्धि का मालिक है।

वली परीछितें पूछ्यूं एम, जे मोटी मत ते जाणिए केम।
मोटी मतनो कहूं विचार, ग्रहजो परीछित जाणी सार।। ४ ।।

फिर परीक्षित ने इस प्रकार पूछा कि यह कैसे जाना जाए कि बुद्धि किसकी बड़ी है? शुकदेवजी कहते हैं कि मैं बड़ी बुद्धि की पहचान कराता हूं। तुम इस सार को समझ कर ग्रहण करना।

मोटी मत ते कहिए एम, जेहेना जीवने वल्लभ श्री कृष्ण।
मतनी मततां ए छे सार, वली बीजी मतनो कहूं विचार।। ५ ।।

बड़ी बुद्धि वाला उसी को ही कहा जाए जिसके जीव के प्रीतम श्री कृष्णजी अक्षरातीत हैं। बड़ी बुद्धि के बारे में सबका यही विचार है, फिर दूसरी बुद्धि के बारे में भी विचार बताता हूं।

एह विना जे बीजी मत, ते तूं सर्वे जाणे कुमत।
कुमत ते केही केहेवाय, नीछारा थी नीची थाय।। ६ ।।

इसके बिना जो दूसरे लोगों की बुद्धि है, उन सबकी मायावी बुद्धि (कुमति) समझना। परीक्षित कहता है कि कुमति किसको कहते हैं? शुकदेवजी कहते हैं कि नीच से नीच जो बुद्धि हो उसे कुमति कहते हैं।

एवडो तेहेनो स्यो वृतांत, तेहेनुं कांइक कहूं द्रष्टांत।
सांभल परीछित कहूं वली तेह, एक मोटी मतनो धणी छे जेह।। ७ ।।

परीक्षित पूछते हैं कि इस कुमति की क्या हकीकत है? शुकदेवजी कहते हैं कि उसका कुछ दृष्टान्त देता हूं। हे परीक्षित! सुनो, मैं फिर से कहता हूं और एक बड़ी बुद्धि के मालिक की पहचान कराता हूं।

Nijanand App